धर्म के मूर्तरूप, प्रभु श्रीराम

अलका जैन द्वारा लिखित

'राम' संस्कृत भाषा में भगवान का एक नाम है जिसे हम सिद्धयोग पथ के बहुत-से नामसंकीर्तनों में गाते हैं। महोत्सवों तथा सत्संगों में, भगवान राम का नाम दिव्य कृपा का आवाहन करने व सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गाया जाता है, साथ ही जो प्रेम भगवान का स्वभाव ही है, उसकी अनुभूति करने हेतु अपने हृदय को ग्रहणशील बनाने के लिए भी भगवान राम का नाम गाया जाता है। 'राम', भगवान का एक नाम है और यह हमारी आन्तरिक दिव्यता का, हमारी आत्मा का भी नाम है।

भारत के दिल्ली शहर में पली-बढ़ी होने के कारण भगवान राम के नाम से मेरी स्मृतियाँ बचपन से ही जुड़ी हैं—मुझे याद है कि मैं जहाँ भी जाती और लगभग हर वार्तालाप में मैं भगवान राम का नाम सुनती। लोग, भगवान राम के नाम के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करते, चलते-चलते एक-दूसरे को "राम-राम" कहते, आनन्द व उल्लासमय अवसरों पर तथा उदासी व निराशा के समय भी भगवान राम के नाम का उच्चारण करते। कुछ लोग, "जय श्रीराम" या "जय सियाराम" कहते। कुछ लोग केवल "राम-राम" कहते। मेरा सबसे पसन्दीदा अभिवादन है, "जय राम जी की।" प्रभु श्रीराम का नाम भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने की जड़ों में व्यापक और अभिन्नरूप से समाया हुआ है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि प्रभु श्रीराम का सतत आवाहन करने से नकारात्मक शक्तियाँ दूर हो जाती हैं और मांगल्य का पदार्पण होता है।

प्रभु श्रीराम, सृष्टि के पालक भगवान श्रीविष्णु के सातवें अवतार थे। अतः, परमात्मा ने सज्जनों की रक्षा करने, दुष्टों का विनाश करने और संसार में धर्म को पुनः स्थापित करने के लिए मानव-रूप में अवतार लिया था। भगवान श्रीराम को श्रद्धापूर्वक "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा जाता है जिसका अर्थ है, 'वे जो धर्म की रक्षा करते हैं।'

'राम' यह नाम, संस्कृत के मूल शब्द 'राम' से आता है जिसका अर्थ है, 'प्रशान्त', 'शान्ति स्थापित करना', 'प्रसन्न करना' और 'आनन्दप्रद', 'हर्षदायक'। प्रभु श्रीराम 'रामचन्द्र' [चन्द्र जैसे उज्ज्वल], 'दशरथनन्दन' [राजा दशरथ के प्रिय पुत्र] और 'राघव' [वे जो रघुवंश के हैं] नाम से भी जाने जाते हैं।

भगवान राम धर्म, शौर्य, शील, सत्यनिष्ठा, करुणा, प्रेम, आज्ञाकारिता, साहस एवं समस्थिति, इन सद्गुणों के मूर्तरूप थे। इस कारण वे लोगों के परम प्रिय हैं, सभी उनका सम्मान करते हैं व श्रद्धा से उन्हें पूजते हैं। भारत में अनेक लोगों के लिए भगवान राम एक आदर्श मानव की साक्षात् मूर्ति हैं।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत महाकाव्य 'रामायण' [प्रभु श्रीराम की यात्रा] में प्रभु श्रीराम के जीवन-चरित्र का वर्णन है। रामायण, विश्वसाहित्य के सर्वाधिक विशाल एवं प्राचीन महाकाव्यों में से एक है जिसमें लगभग चौबीस सहस्र श्लोक हैं, ये श्लोक त्रेतायुग की घटनाओं को वर्णित करते हैं; भारतीय कालगणना के अनुसार, त्रेतायुग, चार युगों में से दूसरा युग है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना, भारत की पारम्परिक शास्त्रीय भाषा, संस्कृत में की गई थी। सोलहवीं शताब्दी में सन्त-कवि गोस्वामी तुलसीदास ने उत्तर-प्रदेश की स्थानीय भाषा, अवधी में भगवान श्रीराम के जीवन-चरित्र को पुनः वर्णित किया, जिससे सामान्य जन को भी यह कथा सुलभ हो सके। तुलसीदास जी की इस ग्रन्थ-रचना का नाम है, 'रामचरितमानस' [भगवान राम की वीरगाथाओं का सागर]।

सम्पूर्ण रामायण में हमें, दिव्य सद्गुणों के अनुरूप जीवन जीने के प्रति भगवान श्रीराम की दृढ़ता और धर्मसंगत रीति से अपने समस्त कर्म करने के प्रति उनकी अविचल प्रतिबद्धता का परिचय मिलता है।

श्रीराम, अयोध्या के युवराज थे। राजा दशरथ की छोटी रानी अपने स्वयं के पुत्र को राजा बनाना चाहती थी, इसलिए प्रभु श्रीराम को वनवास में भेजा गया। अतः प्रभु श्रीराम ने, अपनी अर्धांगिनी सीता व अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह वर्षों तक वन-वन भटकते हुए, एक सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत किया। वनवासकाल में उन्होंने उन ऋषि-मुनियों को सुरक्षा व सुख प्रदान किया जिन्हें दैत्य परेशान करते व कष्ट पहुँचाते थे। प्रभु श्रीराम का अन्तिम कार्य था, दैत्यराज रावण को परास्त करना जो सीता जी का अपहरण कर उन्हें भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित द्वीप, लंका ले गया था। दुष्टता का मूर्तरूप रावण, धर्म के बिलकुल विपरीत था। सीता जी को रावण से छुड़ाकर लाने के इस वीरता के कार्य में वानरसेना के प्रमुख, हनुमान जी ने भगवान श्रीराम की सहायता की। सेवा और निष्ठा के साकार रूप, हनुमान जी, प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त थे। धर्मरक्षा के कार्य में अपने प्रभु के लिए मंगल कार्यों में सहायता करने हेतु वे किसी भी सीमा तक सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहते थे। भगवान श्रीराम अपनी अर्धांगिनी को मुक्त कर, तथा वनवास की अवधि समाप्त होने पर अपने सहयोगियों सहित अयोध्या वापस लौटे जहाँ अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ उनका राज्यतिलक किया गया। कहा जाता है कि रामराज्य की अवधि ग्यारह हज़ार वर्षों की थी जो कि सद्गुणों के अक्षय साम्राज्य का प्रतीक है।

***

भारत में, विभिन्न आनन्दपूर्ण महोत्सवों के माध्यम से भगवान श्रीराम की पूजा की जाती है व उनके सम्मान में उत्सव मनाए जाते हैं।

भारतीय पंचांग के चैत्र माह की नवमी को 'रामनवमी' मनाई जाती है, जो कि ग्रेगोरियन कैलेन्डर के अनुसार मार्च-अप्रैल में आती है, यह प्रभु श्रीराम का जन्मोत्सव है। इस दिन भक्तगण मन्दिरों में दर्शन करने जाते हैं, श्रीराम की कथाओं का पठन व श्रवण करते हैं। कुछ लोग दिन भर उपवास करते हैं और दिन का समापन पकवान से करते हैं।

नवरात्रि के तुरन्त बाद यानी पंचांग के अनुसार आश्विन माह की दशमी को 'दशहरे' का उत्सव मनाया जाता है। यह सितम्बर-अक्टूबर माह के आस-पास आता है और यह अवसर है, रावण पर भगवान श्रीराम की विजय का जो कि बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। पूरे भारत में, दशहरे के दिन दशानन रावण के विशाल पुतले बनाए जाते हैं जिनमें पटाख़े भरे होते हैं। शाम हो जाने पर, लोग बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं, और एक कलाकार, राम का वेश बनाकर रावण के पुतले पर तीर चलाता है। पटाख़ों के शोर तथा भीड़ के जयकारों के बीच पुतले में आग लग जाती है। दशहरे के पहले के दिनों में रामायण की प्रस्तुतियाँ होती हैं जिनमें नृत्य-नाटिकाओं के स्वरूप में रामलीला आयोजित होती है। जब मैं छोटी थी तब हम उत्साहपूर्वक वर्ष के इस अवसर की प्रतीक्षा करते थे ताकि हम विभिन्न रामलीलाओं को देख सके। भगवान राम के वीरतापूर्ण व करुणामय कार्यों को देखकर हम मन्त्रमुग्ध व आनन्दविभोर हो जाया करते थे। यद्यपि हम बच्चे थे किन्तु रामलीला ने हमें धर्म के पथ पर उत्साहपूर्वक चलने की शिक्षा प्रदान की।

दशहरे से बीस दिन बाद, पंचांग के अनुसार कार्तिक माह के पन्द्रहवें दिन दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। यह 'प्रकाश का त्यौहार' लंका-विजय के पश्चात् भगवान राम के अयोध्या में प्रवेश का प्रतीक है; उनका आगमन रात्रि के समय हुआ था, अतः उनके मार्ग को घी के दियों से प्रकाशित किया गया था। दीपावली पर्व, अन्धकार पर प्रकाश के विजय का द्योतक है। इस दिन, लोग अपने घरों की विशेष रूप से सफ़ाई करते हैं, प्रातःकाल में अभ्यंग-स्नान करते हैं और नवीन वस्त्र धारण करते हैं। कई तरह की मिठाइयाँ व पकवान बनाए जाते हैं, जिन्हें वे मित्रों व पड़ोसियों को बाँटते हैं। इस उत्सव का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, दिए जलाकर अपने घर के अन्दर व आस-पास रखना। रात्रि में लोग घरों के बाहर एकत्र होकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं और पटाख़े जलाते हैं। मुझे अपनी दादी की बात याद आती है—वे कहती थी कि पटाख़ों के शोर से असुरी शक्तियाँ दूर भाग जाती हैं। कैनडा के मॉन्ट्रियल में जहाँ मैं रहती हूँ, आज भी मेरे कई मित्र रामचरितमानस के अखण्ड पाठ का आयोजन करते हैं। चौबीस घण्टे चलने वाले इस पाठ में मेरे मित्र व मैं बारी-बारी से अलग-अलग समय पर एक नियत अंश का पाठ करते हैं। हम सब मिलकर, दिन व रात पाठ करके पूरे ग्रन्थ का पाठ पूर्ण करते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, हम भगवान श्रीराम के नाम का संकीर्तन करते हैं और प्रोत्साहन पाते हैं कि हम भी अपने अन्दर उन दिव्य सद्गुणों का विकास करें जिनका वे मूर्तरूप थे। मुझे आज भी वह दिन याद है, जब मैं वर्ष १९८९ में पहली बार श्री मुक्तानन्द आश्रम गई थी और मैंने अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में गाई जा रही 'श्रीराम जय राम जय जय राम' की धुन सुनी थी। उस क्षण, भगवान राम के नाम का ऐसी श्रद्धा से संकीर्तन होता सुनकर, मुझे अपने अन्तर की गहराई में महसूस हुआ कि मैं अपने घर में ही हूँ—क्योंकि मैं एक ऐसे पथ पर आ गई हूँ जो प्रभु श्रीराम के सद्गुणों का पर्यायवाची है, यह उन सद्गुणों का प्रकटरूप है।

जय श्रीराम!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।